श्री रामकुमार आत्रेय के साहित्य में युवा मनो वज्ञान

मीनाक्षी शर्मा
शोध छात्रा

मनो वज्ञान को मन के वज्ञान की संज्ञा दी गई है | मनोभाव को कोशों के अनुसार तात्पर्य दिया गया है:- 'भाव' 'मनोभाव', मनो वकार और मनोवेग (1) जिसका अर्थ मन से उत्पन्न होने वाले वचार एवं प्रवृतियाँ हैं | आधुनिक आलोचक भाव को 'व्यक्ति की अंतरात्मा का वशेष धर्म' कहा है | (2) कसी ने बाह्य जगत के संवेदनों में मनुष्य के ह्रदय में होने वाले वकार बताया है (3) शब्दगत अंतर जो कुछ भी हो, तात्पर्य सबका ह्रदय था अन्तरात्मा के कारण वशेष से जागृत होने वाले वकारों से है | यद्य प कहीं-कहीं अंतरात्मा के स्थान पर 'मन' भी मलता है | ऐसे स्थलों पर इस शब्द को ह्रदय या अंतरात्मा का पर्यायवाची माना गया है |

युवावस्था में शारीरिक वकास के साथ-साथ मनोभाव भी निरन्तर सतेज और प्रदीप्त रहते हैं | (4) यौवन की उष्णता इतनी साहसपूर्ण, स्वच्छन्द और गतिशील होती है क वह अपने सम्पर्क से चेतन को ही नहीं, जड़ को भी एक प्रकार का मनोरम आकर्षण प्रदान कर देती है | इस आयु में युवक एवं युवती के व्यक्तिगत जीवन की गाथा में ऐसी व वधता पूर्ण रोचकता रहती है जिसकी ओर अनायास ही सभी का ध्यान आकृष्ट हो जाता है | समाज व राष्ट्र की गति को प्रवाह देना व उसे आवश्यकता अनुसार मोड़ देने की क्षमता, इस अवस्था का वशेष गुण है | आत्रेय जी ने युवकों व युवतियों के मनोभावों का वर्णन वशेष रू च लेकर कया है | वशुद्ध चत्रण कया है | वर्गीकरण की दृष्टि से मनोभावों को सहज, सामान्य, व्यक्तिगत, संस्कारगत एवं अन्य भावों (5) में वर्गीकृत कया गया है | अ धक समानता होने पर भी ध्यान में रखने योग्य बात है क उपरोक्त वर्गों के अन्तर्गत आने वाले युवकों एवं युवतियों की समस्त मनोवृतियाँ एक सी नहीं होती |

<u>सहज व सामान्य मनो वज्ञान</u>:-

युवक एवं युवती के कुछ मनोभाव आयु के देन होने के कारण प्रत्येक आयु वर्गों में पाए जाते हैं | युवावस्था में पदार्पण करते ही युवती में जिस प्रकार निसर्ग की देन के रूप में प्रकृतिगत कोमलता, संवेदनशीलता, लज्जा आदि भाव अनायास ही प्रवेश कर जाते हैं | वैसा ही बदलाव युवक में भी होता है परन्तु युवती की अपेक्षा उसमें सामान्यतया साहस, उत्साह, शौर्य, ओजस्विता प्रमुख रूप में वद्यमान रहती हैं | भावुकता, स्नेह, कामवासना, संवेदना आदि मधुर भाव दोनों में समान से रूप में रहते हैं |

स्वभाव की सहज-सरलता, कोमलता, करुणा और स्नेह आदि मनोभाव इस अवस्था में क्रमशः वक सत होकर युवती में आते हैं | कुछ मनोभाव तो उनकी शारीरिक सुकुमारता, प्रकृतिजन्य जननशीलता व पोषण भावना उनके मानस के ऐसे अंग बन जाते हैं क उनके प्रायः सभी क्रया कलापों

के मूल में इनकी ही प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में वद्यमानता रहती है आत्रेय जी ने 'सदभावना का चमत्कार' कहानी में पकती का स्वाभा वक करुण और स्नेहशीलता का वर्णन कया है |

'पकती का सारा ध्यान पानी निकालने में लगा हुआ था, इस लए वह आनंद को नहीं देख पाई थी | उसके वचन सुनकर वह चौंक उठी | उसने आनन्द को ध्यान से देखा तो वह समझ गई क सन्यासी की वेशभूषा से यह कसी उच्च कुल का व्यक्ति है |

पकती ने आनंद को आदरपूर्वक शीश झुकाकर कहा:- 'भन्ते ! मैं मतंग नाम अछूत जाति की कन्या हूँ मेरे हाथों छुआ जल आपको नहीं पीना चाहिए |

आनंद ने उसकी बात सुनकर, मुस्कराते हुए बोला:- देवी, मैंने आपकी जाति नहीं पूछी | केवल जल पलाने का अनुरोध कया है | जन्म से कोई मनुष्य अछूत नहीं होता, न ही जल, वायु और प्रकाश की कोई जाति होती है है | मुझे बहुत प्यास लगी है कृपया शीघ्र जल पला दीजिये |

पकती ने आनंद को श्रद्धापूर्वक जल पला दिया तो आनंद ने तृप्त होकर कहा:- इतना मधुर एवं शीतल जल पलाने के लए आपका धन्यवाद !

पकती आनन्द के सदभाव से बहुत प्रसन्न हुई, उच्च कुलों वाले लोग उसका अपमान कया करते थे, भूल से भी यदि उसका वस्त्र उनमें से कसी को छू गया, तो मार-पीट करने लगते थे | आनंद ने तो उसे 'भद्रे तथा 'देवी' कहा और उसके हाथ का जल पी लया, उसके मन में आनंद के प्रति स्नेह और श्रद्धा उमड़ पड़ी |

भाग कर आनंद के पास पहुँचने के बाद उसने कहा:- भन्ते, मैं आपके निश्छल और वनम्र व्यवहार से बहुत प्रभा वत हूँ | कृपया मुझे अपनी सेवा में रख लीजिये |[6]

पकती को ही नहीं आनन्द को पकती से स्नेह हुआ | आनन्द ने मतंग जाति की अछूत कन्या से पानी पीने का अनुरोध तथा वह अपने द्वारा कये गए सदभाव से प्रभा वत है | यह स्नेह नहीं तो क्या है ?

पकती ने बुद्ध के आदेशानुसार सभी के साथ सदभावना का आचरण कर सम्मान प्राप्त कया |

'दुःखीया राजकुमारी' कहानी में राजकुमारी का स्वार्थी स्वाभा वक दुःख प्रकट कया है | वह बेचारी दुःखी है अपने सपनों के सौदागर को पाने के लए, साथ ही स्वाभा वक चंता है | पता के राज्य बारे, कभी पता का राज्य न छीन जाए | उसे सबसे बड़ा कष्ट है क उसे ऐसी से वका का न मलना, जो यह बता सके, उसे कैसे और कस डजाइन के कपडे पहनने चाहिए | क्यों क वह जिन कपड़ों व डजाइन को एक बार पहन लेती, दूसरी बार उन्हें नहीं पहनती थी | उसको पति प्राप्त करने में वासना तृप्ति और कपड़ों से स्वाभा वक वेदन प्रकट होती है |[7]

करुना, दया और सहानुभूति का अनूठा उदाहरण ' डूब के मरजा वीर मेरे' कहानी में मलता है | दुःखी व पीड़ा में कसी को देख दया व करुणा स्वतः जागृत हो जाती है |

प्रकाश अपने भाइयों के संतरों की इज्जत से खलवाड़ कर, अपनी बहन के दुष्कर्म का बदला लेने का प्रयास करते हैं, देखती है तो वह अपने भाइयों को ऐसे दुष्कर्म से दूर हटने को कहती है

परन्तु भाइयों को जब वह अ डग पाती है तो संतरों की करुण पुकार सुन दया और सहानुभूति से तिरोहित हो उठती है | जब पाती है क वें उसे नंगा कर रहे तो उसे बचाने हेतु वह स्वयं भाइयों के सामने अपने अधोवस्त्र उतारकर उन्हें चेतावनी देती है | कहती है:- 'संतरों के साथ बुरा काम करना ही है तो पहले मेरे साथ करो' | मेरी इज्जत से खेलकर ही संतरों को पा सकोगे |[8]

बहन को नंगा पा उनकी गर्दन झुक जाती है | बहन के इस त्याग को देख कर उनके मन का द्वेष व क्रोध रफूचक्कर हो जाता है | वे श र्मंदा होते हैं | बहन के ही कारण उनमें दयाभाव जागृत हो जाता है |

युवाओं में चाहे वह युवक है या युवती, जिज्ञासा, कौतुहल एवं उत्साह के सामान्य भाव बराबर पाए जाते हैं | युवती में इनकी वद्यमानता उनके स्वभाव की सरलता और भोलेपन को सू चत करती है | नवीनता के प्रति जिज्ञासा व कौतुहल मुख्य रूप से होता है युवा हृदय में कठिन कार्य करने की तत्परता रहती है | अपनी स्वाभा वक स्फूर्ति से वह उसे पूरा करता है चाहे कार्य अपना हो या पराया, आत्म रक्षा का हो या सहायता का, खेलकूद का हो या परिश्रम का, करने को सदैव तैयार रहता है:-

बहुत से
जोशीले युवक निकले थे,
एक अनजान सफर पर
सतारों को छूने के लए | [9]

उत्साह के भाव समान होने पर भी सभी लक्ष्य प्राप्ति में सफल नहीं होते | उत्साह हीन असफल हो जाते हैं | परन्तु जो अ डग रहते हैं, उन्हें पंख लग जाते हैं और आसमान छू लेते हैं |

'एक पत्थर' लघु कथा में जोश एवं उत्साह का स्वाभा वक चत्रण कया है | अपनी मांगों को लेकर वश्व- वद्यालय के छात्र छात्राएं उमंग से आगे बढ़ रहे हैं | नेता जोर-जोर से चीखकर नारे लगाते तो शेष छात्र-छात्राओं के मु ी बंधे हाथ जोश के साथ उपर उठते और जुबान से नारा गूँजता | शहर में हर जगह पु लस तैनात थी | ट्रै फक जाम हो गया था |[10]

नारी शरीर से निर्बल होती है और कुछ पुरुषों के पाश्ववृति की प्रधानता के कारण सामाजिक असुरक्षा की आशंका उनको भय से आक्रान्त कर देती है | संभवतः इसी कारण स्त्रीजाति में भीरुता सहज रूप में पाई जाती है | कुछ लोग उनका धोखे से शोषण करने से बाज नहीं आते | 'मृत्युलेख' कहानी में दुष्यंत अपनी पत्नी से प्यार का ढोंग करता है 'अलका' के रूप को देखकर, उसका कामुक मन ललचा उठता है | वह अलका को अपनी माता की ओर ध्यान न देने को कहता है | उसे वचन देता है फर भी उसके पीछे उसकी वासना प्रमुख है अलका नहीं(11)

'डूब के मरजा वीर मेरे' में प्रकाश नारी सुलभ भय से ग्र सत है| वह दर्शन को देखकर भयभीत होती है | दर्शन उसका पीछा करता है और बाजरे के खेत में छिपकर, उसके अकेला पा, खेत में खीचना शुरू कर दिया |

युवकों की भांति प्रेम भावना के गुण प्रायः(2) युवतियों में सामान्य रूप से पाए जाते हैं | प्रेम में प्रायः शारीरिक कामना संयुक्त रहती है | जब क प्रेम व वासना केवल शारीरिक मलन और प्रेम ह्रदय का व्यापार है | प्रेम आत्मा और शरीर का कम्पाउंड है| (13) प्रेम पाना और प्रेम करना मानव मात्र की बड़ी आवश्यकता है | वपरीत लंगी के प्रति इतना गहरा निकट सम्बन्ध स्था पत हो जाता है क एक दूसरे के स्वप्नों और उपलब्धियों का सहभागी अनुभव करने लगते हैं | प्रेम कामना का यही सहज रूप है | युवतियों में प्यार पाने की इच्छा पुरुषों से अ धक होती है | प्रसाद जी के अनुसार ' प्रेम का रहस्य जितना स्त्री समझती है पुरुष उतना नहीं समझते |(14)

आत्रेय जी के साहित्य में वासनात्मक मनोभाव मात्र स्त्री के शरीर कामना, अनेक पुरुषों में प्रद र्शत होते हैं | युवतियों में प्रेम- मलन की भावना है चाहे युवक उसे धोखा ही दे रहा हो उन्हें वशवास ही नहीं होता |

'कागज़ के फूल' कहानी में प्रभात जैसा सच्चरित्र युवक में भी काम भावना कम नहीं है | कुमारी पूजा प्रभात से प्रेम करती है, उसे चाहती है | लख भी देती है आकर मेरे पता से बात कर ले | आज वह पूर्व निश्चित कार्य-क्रम के अनुसार आ रहा है वह | प्रभात का स्वागत करने स्टेशन पर खड़ी, पछली बातों की सुखद यादों में डूबी खड़ी थी |

गाडी से उतरते ही बुक-स्टाल की ओर देखा | फर उसके दाई और खड़े खम्बे को देखकर उसकी ओर बढ़ने लगे | उसने मुस्कराते हुए हाथ जोड़ दिए- वे भी मुस्काये, ले कन उसकी आँख उसके चेहरे पर नहीं थी | लगा दूर रहे हैं | प्रभात ने पास आते ही उपेक्षा भरी फसलती सी नजर उसके चहरे पर डाली | वह उसके पैर छूने को नीचे झुकी | ले कन यह क्या ! उसके हाथ उसके पाँव तक पहुंचे भी नहीं थे क वे आगे बढ़ गए | वह चौंक उठी | उसे लगा, पहचान नहीं पाए | वह मुड़ी और बांह पकड़कर कहना चाहा मैं हूँ आपकी पूजा ! ले कन हाथ झटक कर खम्बे के पास बुक-स्टाल पर खड़ी और लड़की के पास पहुँच चुके थे | उसे लगा, प्रभात भी अन्य आद मयों से कम नहीं है |

आत्रेय जी की कहानियों में पुरुष प्रेमभाव के पात्र नहीं [15] वस्तुतः कामभाव के पात्र हैं | यौन तृष्णा की तुष्टि हो जाने पर यौन प्रवृति का आलंबन व्यर्थ हो जाता है यहाँ तक क अरु चकर और घृणास्पद भी मालूम होती है | [16] 'रास्ता बदलता ईश्वर' क वता में पुरुष के यौवन प्रवृति का वर्णन कया है :-

क, कुछ लोग कर रहे हैं
बलात्कार
एक वधर्मी मगर
जवान और सुन्दर महिला
बलात्कारियों को धर्म से
नही था कुछ लेना देना ! [17]

<u>व्यक्तिगत मनोभाव (मनो वज्ञान)</u>

प्रत्येक व्यक्ति में व भन्न मनोभाव पाए जाते है | कसी में भावों की प्रबलता और प्रमुखता होती है कसी में कुछ मनोभाव ऐसे होते है जो अन्यों में नहीं पाए जाते | उन्हें व्यक्तिगत मनोभावों की श्रेणी में रखा जाता है | इनमें आत्मसम्मान, स्वा भमान, दायित्व , देशकाल गत मनोभाव आते हैं | आत्मसम्मान का मनोभाव युवकों की अपेक्षा युवतियों में अ धक पाया जाता है | इस हेतु वे अपने प्राणों को न्योछावर करने को तत्पर रही हैं |

संसार का वही राष्ट्र स्वतन्त्र रह सकता है जिसके युवाओं में आत्म-सम्मान का भाव हो | नारी मनस्खलन होने पर भी - आत्म-सम्मान को नष्ट नहीं होने देती | 'ईलाज' कहानी में कन्या वद्यालय की बारहवीं की छात्राओं को घर जाते समय कुछ लडके रास्ता रोककर बेहुदिया करते | सभी लड़की बिन बोले निकल जाती | रामेशवरी ने अभी वद्यालय प्रवेश लया था, यह देखकर उससे रहा नहीं गया |

'अगले दिन रामेश्वरी जान-बुझकर लड़ कयों के झुण्ड से अलग होकर लड़कों के समीप से गुजरने लगी | लड़कों ने रामेश्वरी को देख अश्लील फकरे कसने शुरू कये | रामेश्वरी लडको को देखकर मुस्कराई | उनका हौंसला बढ़ा और पास आ गए | उसने हीरो समझने वाले लड़के की बांह पकड़ ली | रामेश्वरी अचानक झुकी जैसे जमीन पर गरी कोई वस्तु उठा रही हो | इससे पहले कुछ समझ पाते, हाथ में थमा सैं डल बिजली की तेजी से सर पर बरसने लगा | समीप से गुजरने वाले लोगों ने आश्चर्य से देखा क अपनी हेकड़ी भूल कर लड़के गरते पड़ते वद्यालय गेट से भाग रहे थे |□ [18]

आत्रेय जी के अ धकाँश युवक पात्र आत्म सम्मान की रक्षा हेतु सदैव सचेत रहते हैं | ' एक सच्ची कहानी' में परिवार की लाचारी के कारण युवक को भीख मांगनी पड़ती है | पीछे से आवाज सुनकर वह रुका | उसके काम करने पर कहने लगा क्या मैं काम कर सकता हूँ ? मैंने कहा; हाँ, तुम स्टेशन पर मूंगफली बेच सकते हो | सर्दी में खूब बिकेंगी | दिन भर आठ गा ड़याँ गुजरती हैं - पच्चास रुपये कमा

लोगे | मैंने सुझाव दिया | मेरी बात मानी गई | उसको मैंने दौ सौ रुपये दिए | पूरा पता लखकर दिया | कमाने पर लौटा देना | काम पड़ने पर और दूंगा |

वही कशोर साफ़-सुथरे कपडे पहने, चहरे पर स्वा भमान की चमक लए मेरे सामने खड़ा था | वह मेरे पैसे लौटाने आया था तथा धन्यवाद करने | न चाहते हुए भी मैंने वे रूपये ले लए, ता क उसका स्वा भमान ना टूटे |□ (19)

' अच्छाई का बीज' लघु कथा में युवक घायल की सहायता ही नहीं करता, अ पतु उसका ईलाज भी करवाता है | वृद्ध के पैसे लौटाने की कहने पर, युवक पैसे न लेकर, उनसे कहता है क इन पैसों से यदि कोई असहाय मले तो उस पर खर्च कर देना | कहकर वृद्ध को देवता जैसा लगा |(20)

आत्रेय जी की युवक-युवतियों में देश भक्ति की भावनाओं को स्थान मला है | आज देश व भन्न परिस्थितियों से गुजर रहा है | कहीं धर्म के नाम पर, कहीं जाति के नाम पर, क्षेत्र के नाम पर, सम्प्रदाय के नाम पर देश बंटा लगता है जो सबसे भयंकर खतरा है | चुनाव भी इन्ही का सहारा लेकर लड़े जाते हैं | 'धुन' लघु कथा में वधायक पद के उम्मीदवार चुनाव में इसी को आधार बना वोट प्राप्त करने का प्रयास करते हैं | इस हलके से चुनाव लड़ने वाला उम्मीदवार आया और कहा □केवल मैं ही आपकी जाति का उम्मीदवार हूँ मुझे ही वोट मलनी चाहिए |□

दूसरा उम्मीदवार आया □हमारा धर्म खतरे में है | अपने धर्म की रक्षा हेतु अपना वोट मुझे दें |□ तीसरे ने क्षेत्रीयता के आधार पर वोट लेना चाहा | मैं उलझन में था क कसे वोट दूँ ? इसी उलझन में अभी तक पाया था, हाथों में उठाये खड़ा था | छुट गया, फर्श पर पड़ते ही दो-तीन टुकड़े हो गये और उसमे से सफ़ेद-सफ़ेद चूर्ण जैसी कोई चीज निकली | मैं समझ गया, उपर से सब ठीक, अंदर से खोखला कर दिया गया है |

साथ ही लगा क अभी-अभी जो धर्म, जाति तथा क्षेत्रीयता के आधार पर वोट मांगने आये थे | वे भी घुन की तरह देश को भीतर हो भीतर खोखला कर रहे हैं और कसी दिन देश को _____□ (21)

' दूसरा रास्ता' में वह युवक निर्धन था और बेकार भी | बेकार इस लए क उसके देश में लोकतंत्र था | वहां नौकरिया बोली लगाकर खरीदनी पड़ती थी | कई वर्ष स्कुल-कालेज में रहकर, पढ़ाई करने के पश्चात देह तोड़ मजदूरी करना उसके वश की बात नहीं थी | अब दो रास्ते थे | पहला रास्ता आतंकवादी बन कर लोगों को लूटना-मारना, मौज का जीवन जीते हुए, पु लस की गोली का शकार बन जाना | उसे यह रास्ता अपने पारिवारिक परम्परा के वरुद्ध लगा | इस लए दूर रास्ता अपनाया और आत्महत्या कर ली | (22)

समाज में अनेक बुराइयों का जन्म हो रहा है | उन बुराइयों की बे ड़याँ काटने के लए स्वदेश प्रे मयों का प्रयत्न चल रहा है |

उनकी आँखों में भरी थी
बुझे चूल्हों की राख
और कोमल हाथों में थी
लोहे की हथक ड़याँ | (23)

संस्कारगत मनो वज्ञान (मनोभाव)

मनोभावों का सम्बन्ध संस्कारों से होता है | माता- पता व गुरु जैसे संस्कार देते हैं या आदर्श प्रस्तुत करते हैं वैसे ही उसके आचरण पर भी प्रभाव पड़ता है | माता- पता से बच्चों को कर्मठता, परिश्रम एवं इमानदारी के गुण अनायास ही मल जाता है | ' ईमानदारी की जीत ' में कशन वश्व- वद्यालय में प्रवेश फ़ीस की मज़बूरी में है | फ़ीस जमा कराने का अंतिम दिन है | उसका सेठ उतने ही पैसे डाकघर में कराने के लए देता है | प्रबल इच्छा है क फ़ीस भरी जाए | उसके मन में एक बात बार-बार घर कर रही है क ये पैसे आज फ़ीस जमा करा दूँ | अनेकों वचार आया, सेठ को बहकाया जाए, धोखा दिया जाये आदि | जब वह डाकघर पहुंचा, उधेड़-बन में लेट हो चला था | डाकघर पहुँच कर उसने फ़ीस का ध्यान रख, सेठ के कहे अनुसार रा श जमा करा दी | लेट आने पर सेठ ने पूछा, क्या कारण रहा लेट आने को ? कशन ने सच-सच बता दिया | सेठ प्रसन्न हुए, उसकी ईमानदारी पर और उसे फ़ीस हेतु अतिरिक्त रा श उपलब्ध करा दी |(24)

संस्कारगत मनो वज्ञान का उदाहरण है ' संकल्प' कहानी | इसमें रामेश्वर स्पष्ट करता है क मैं अपने बाप की सेवा नहीं कर सकता तो मेरे बेटे भी मेरी सेवा नहीं करेंगे | वह कहता है आज के जमाने में कोई बाप की सेवा नहीं करता बाबूजी | सब कहने की बात है कसी के पास सेवा करने का समय ही नहीं है | मैं अपने बाप का अकेला बेटा हूँ | मैं धंधे की तलाश में यहाँ आया और बाप गाँव में तड़प-तड़प कर मर गया | जब मैं अपने बाप की सेवा नहीं कर सका तो मेरा बेटा मेरी सेवा क्यों करेगा | (25)

अन्य मनोभाव

माता- पता के प्रति सम्मान के भाव युबाओं में समान रूप से तो नहीं अ धकाशों में इसकी प्रगाढ़ता रहती है | 'माँ का दर्द' में बहन भाई को कहती है 'भाई, तू तो मर्द है तूं क्या जाने माँ का दर्द' | बेटा यदि अपनी माँ को माँ ना कहे तो वह दुनिया की सबसे दुःखी औरत होती है | बेटे के मुंह से निकला माँ का शब्द तवे की तरह तपते दिल पर ठन्डे पानी की तरह काम करता है | (26)

भाई-बहन का स्नेह भी कम नहीं होता | 'ब लदान' में सरला कहती है अंकल जी, बहने अपने भाइयों के लए हमेशा ब लदान देती आई हैं तो मैं पीछे क्यों रहूँ ? (27)

‘ भाई का प्यार’ लघु कथा में बहन कहती है □नहीं मैडम ! मेरा भाई तो कसान है यदि मैं न जाऊं तो वह राखी बंधवाने आ जाएगा | ऐसे में उसके सैकड़ों रुपये खर्च हो जाते हैं | इस लए हर वर्ष मैं जाती हूँ और शगुन के लए एक रुपया लेती हूँ |□ (28)

‘ले खाओ अंगूर, बेटा, तुम्हारे लए लाया हूँ’ कहकर पता का पुत्र के प्रति स्नेह दिखाया है चाहे पता युवा ही क्यों न हो |

अतः उपरोक्त से स्पष्ट है क आत्रेय जी ने युवाओं के स्वाभा वक मनोभावों को पीठिका के रूप में प्रस्तुत करने के उपरान्त वस्तार रूप से मधुर भावों का व वध रूप से चत्रण कया है | उन्होंने अपने साहित्य में युवाओं के जीवन में आने वाले वासना के भावों की उपेक्षा नहीं की और न ही ऐसे पात्रों की संख्या अ धक है | आचरण और व्यवहारिक जगत में प्रेम के उदाहरण अ धक मलते हैं | वे अपने आचरणों में व व धता उत्पन्न करके सत्कार योग्य हो जाते हैं | जीवन का यथावत चत्र प्रस्तुत करके रचनाओं को रोचक बनाया है | इससे जीवन में रोचकता एवं मानवीयता में वृ द्ध होने के संकेत स्पष्ट हैं |

मीनाक्षी शर्मा
शोध छात्रा
सालवन

संदर्भ

1.	नालंदा वशाल शब्द सागर	पृष्ठ-	1019, 1058, 1059
2.	आचार्य श्याम सुंदर दास साहित्यालोचना	पृष्ठ	211-220
3.	डा. नागेन्द्र रीती काव्य की भू मका	पृष्ठ	59
4.	प्रसाद के साहित्य में मनो चत्रण	पृष्ठ	1, 82
5.	ठोला गुरु सदभाव का चमत्कार	पृष्ठ	8-9
6.	पलुरे तथा अन्य कहानियाँ, मृत्युलेख,	पृष्ठ	87-87
7.	दु खया राजकुमारी, आँखों वाले अंधे	पृष्ठ	59
8.	नींद में घरेलु स्त्री, पंख	पृष्ठ	13
9.	इक्कीस जुटे, एक पत्थर, घुन, दूसरा रास्ता	पृष्ठ	21, 87, 39
10.	W.M. Morston Man like to confuse Love & Apparel	पृष्ठ	328
11.	Theoder Roik of Love & Lust	पृष्ठ	7, 20
12.	पलुरे तथा अन्य कहानियाँ, डूब के मरजा वीर मेरे, कागज के फूल	पृष्ठ	34, 103-104
13.	रास्ता बदलता ईश्वर, क वता संग्रह	पृष्ठ	68
14.	जन चेतना, छोटी सी बात, ईलाज	पृष्ठ	65, 81
15.	परियां झूठ बोलती है, एक सच्ची कहानी	पृष्ठ	13
16.	रोचक संग्रह, ईमानदारी की जीत	पृष्ठ	25
17.	बिना चश्मे का शीशा, संकल्प, माँ का दर्द, ब लदान, पता-पुत्र	पृष्ठ	18, 43, 32, 29
18.	छोटी सी बात, भाई का प्यार	पृष्ठ	32

****